REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 6 | MARCH - 2019

इक्कीसवी सदी में हिन्दी का परिदृश्य

डॉ. सुमन यादव

प्रस्तावना

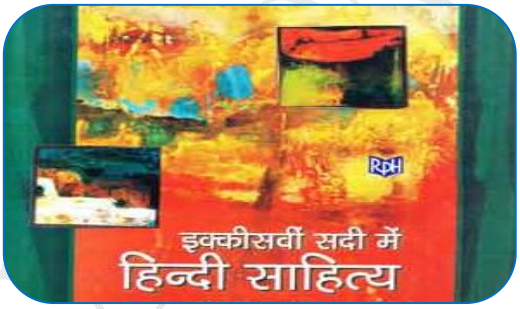

इक्कीसवी सदी बींसवीं शताब्दी से भी ज्यादा तीव्र परिवर्तनों वाली तथा चमत्कारिक उपलब्धियों वाली शताब्दी सिद्ध हो रही है। विज्ञान एवं तकनीक के सहारे पूरी दुनिया एक वैश्विक गांव में तब्दील हो रही है और स्थलीय व भौगोलिक दूरियां अपनी अर्थक्ता खो रही है। वर्तमान विश्व व्यवस्था आर्थिक और व्यापारिक आधार पर ध्रुवीकरण तथा पुनर्सघटन की प्रक्रिया से गुजर रही है। ऐसी स्थिति में विश्व के शक्तिशाली राष्ट्रो के महत्व का क्रम भी बदल रहा है।

हिन्दी जो कि हिन्दुस्थान की भाषा के नाम से जानी जाती रही है। वह अब केवल हिन्दुस्थान की भाषा न होकर सम्पूर्ण विश्व में फैल चुकी है। चाहे कोई वस्तु हो या व्यक्ति, व्यवसाय हो या कुछ और, यदि वह एक क्षेत्र या राष्ट्रीय स्तर से ऊपर उठकर विश्व स्तर तक फैलते है तो निसंदेह वह असाधारण है। एक देश से सम्पूर्ण विश्व की यात्रा करना कोई आसान कार्य नही है। हिन्दी भाषा भी स्वयं एक असाधारण व्यक्तित्व से ओत–प्रोत है, जो अपने गुणों से सभी के दिलों–दिमाग में छा चुकी है। वह एक ऐसी भाषा है जो हर एक शब्द को भावनाओं से जोड़ती है। यदि देखा जाए तो संस्कृत के बाद हिन्दी ने ही लोगों को प्रभावित किया और समय के बढ़ने के साथ–2 उसके बोलने वालों की संख्या भी दिन–दुगनी रात चौगुनी बढ़ी है। इसलिए आज विश्व में सबसे अधिक बोलने वाली भाषाओं में हिन्दी का स्थान महत्वपूर्ण बन चुका है।

'' हिन्दी है साधन आत्मभिव्यक्ति का
सुरों के नाम का धुनों की तान का
ईश्वर तक पहुंचने का मार्ग है हिन्दी
भावनाएं व्यक्ति की व्यक्त करने का माध्यम हिन्दी''

हिन्दी भारतवर्ष के लोगों से जितनी जुड़ी है, उतनी ही आज बहुत देशों के लोगों से जुड़ चुकी है। श्रीलंका माककरोशस, नेपाल म्यांमार आदि ऐसे देश है, जिनके भारत के लोग भी मौजूद है और उनके दिलों में हिन्दी भी उन्ही लोगों के कारण इन देशों में हिन्दी एक मुख्य भाषा बन चुकी है।

यदि हिन्दी साहित्य की बात की जाए तो हमारे देश के महान साहित्यकारों ने तो हिन्दी को संवारा है ही, साथ ही विश्व के कई देशों में भी हिन्दी साहित्यकार मौजूद है। वह न केवल हिन्दी में रूचिपूर्वक लिखते हैं बल्कि हिन्दी का सम्मान भी करते है। भारत के हिन्दी साहित्यकारों का हिन्दी के विकास में योगदान तो रहा ही है, वर्तमान समय में विभिन्न देशों के हिन्दी साहित्यकार भी हिन्दी साहित्य को विकास की सीढ़ी पर चढ़ा रहे है। हिन्दी साहित्य में रूचि रखने वाले देशों में नेपाल एक प्रमुख देश है एवं न सिर्फ भाषा और साहित्य की दृष्टि से बल्कि सांस्कृतिक दृष्टि से वह हमारा सबसे पुराना एवं महत्वपूर्ण सहयोगी भाई देश रहा है। वहां के लोग हिन्दी के प्रति अगाध प्रेम रखते है।

हिन्दी जहाँ प्रत्येक देश को अपनी ओर खींच रही है, वही वह इंटरनेट पर भी अपना अहम स्थान प्राप्त कर चुकी है। इंटरनेट के माध्यम से भी लाखों लोग हिन्दी की ओर आकर्षित होते है और इंटरनेट पर हिन्दी फिल्में गान, नृत्य आदि को सीखने पर प्रयत्न करते है। हिन्दी एक मात्र ऐसी भाषा है, जिसने बहुत कम समय में इंटरनेट पर अपनी जगह तय की है।

आज के समय में हिन्दी ने न केवल अपने राष्ट्र में अपितु विदेशों में भी अपनी पहचान गढ़ी है और यह अति आवश्यक भी है कि वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी की इस बदलती भूमिका में हम इसका और विस्तार करें।

हिन्दी कोआज हर जगह पहचान मिली है और इससे हमारी पहचान तथा हमारा अस्तित्व भी जुड़ा है, इसलिए यह परम आवश्यक है कि हिन्दी को उचित सम्मान की दृष्टि से देखा जाए क्योंकि यह न सिर्फ भारत अपितु विश्व में उभरती एक नई पहचान है।

'' भारत हो, चीन हो या हो चाहे जापान,
हिन्दी ने गढ़ ली है अपनी नई पहचान''।

अतः वर्तमान परिप्रेक्ष्य की बात करें तो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी की समृद्ध परम्परा दृष्टिगोचर प्रतीत होती है। अमेरिका सहित विश्व के अनेक राष्ट्रो के लगभग 176 विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन अध्यापन सतत जारी है। अस्सी करोड़ से अधिक आमजनों द्वारा बोली जाने वाली हमारी हिन्दी भाषा संयुक्त राष्ट्रसंघ में स्थापित नही हो पायी है। इसके विपरीत लगभग चालीस करोड़ लोगों द्वारा बोली जाने वाली स्पेनिश, क्रमशः बीस तथा इक्कीस करोड़ लोगो द्वारा बोली जाने वाली रूसी व अरबी भाषाओं का वहां स्थापित होना निश्चित रूप से हिन्दी के समक्ष चुनौती है, साथ ही लज्जा का विषय भी है। हालांकि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्थितियों में सुधार हो रहा है। क्योंकि हिन्दी भाषा की जड़े विश्व के कई देशों में काफी गहरी है। संयुक्त राज्य अमेरिका में सन् 1975 ई0 में हिन्दी–भाषा का व्याकरण अमेरिका निवासी सैमुल कैलाग ने हिन्दी का अनुशीलन करके तैयार किया। हिन्दी व्याकरण की दृष्टि से यह एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ माना जाता है। वर्तमान की बात करें तो अमेरिका के 35 विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जाती है। इस के अतिरिक्त सोवियत रूस और भारत की दोस्ती जगजाहिर है क्योंकि इस मैत्री का आधार सांस्कृतिक आधार है। यहां के सुधीजन सम्पूर्ण साहित्य (आदिकाल, मध्यकाल, आधुनिक काल) के प्रति रूचि एवं सम्यक ज्ञान रखते है। महाकवि तुलसीदास के समचरित मानस का सफल रूसी अनुवाद वेरन्निकोव ने किया है। अन्य महत्वपूर्ण रूसी हिन्दी के विद्वान वी0 चेरनीगोव, वी0 क्रेस कोविन् एवं बाबलिन है। इन लोगों के द्वारा गद्य एवं पद्य रचनाओं का रूसी भाषा में अनुवाद प्रस्तुत किया जाता है।

इस तरह विश्व परिदृश्य में हिन्दी के प्रचार–प्रसार को देखते हुए ऐसा लगता है कि अ बवह समय दूर नही जब से संयुक्त राष्ट्रसंघ की भाषा न बनाया जा सके। क्योंकि हिन्दी भाषा आज साहित्य लेखन, वाचन तथा गायन आदि के रिवाज से हटकर अब विज्ञान–प्रौद्योगिकी तथा व्यापार–प्रबन्धन आदि प्रत्येक क्षेत्र में यह अपनी उपस्थिति दर्शा चुकी है। अन्तर्राष्ट्रीय विचार धाराओं का परिप्रेक्ष्य वर्तमान हिन्दी साहित्य में पूर्णतः परिलक्षित हो रहा है। छह महाद्वीपों के सात सागरों से टकराता हुआ भारत भारती को विश्व भारती के पद पर आसीन करेगा। हमें उस दिन का अब बहुत इन्तजार नही करना पड़ेगा जब आचार्य विनोबा जी का वह संकल्प सार्थक होगा जिसे उन्होने इस वाक्य के द्वारा अभिव्यक्त किया था– हिन्दी को गंगा नहीं समुन्द्र बनाना होगा।

'' हिन्दी भाषा को बढ़ावा दीजिये। राष्ट्र भाषा का सम्मान कीजिये।''

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य, मोनिका वर्मा एजुकेशनल इंस्टीटयूट, आगरा।
2. वैश्विक परिदृश्य में राष्ट्रभाषा हिन्दी की विकास प्रक्रिया, डॉ0 वीरेन्द्र सिहं यादव, राष्ट्रभाषा महासंघ मुम्बई।
3. उपाध्याय, करूणाशंकर : हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य सामयिकी, आगरा।